5:23 PM 0.0KB/s 4G 3G 30
7 b l jain Rajkeey...

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2016
न ' य यै म ु र्का य ' र्धर

राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

*प्रो.बनवारी लाल जैन
**डॉ.देवेन्द्र कुमार अग्रवाल (शोधार्थी)
*निर्देशक (विभागाध्यक्ष) शिक्षा संकाय
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाडनूं, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर क्या है ? न्यादर्श हेतु राजस्थान राज्य के चार संभागों से 8 जिले (जयपुर, दौसा, टोंक, नागौर, स.मा., करौली, कोटा एवं झालावाड़)से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कुल 32 राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों से 640 विद्यार्थियों (320 छात्र एवं 320 छात्राएँ) को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। विद्यार्थियों की सृजनशीलता मापने के लिए मानकीकृत बाॅकर मेहदी द्वारा निर्मित सृजनषीलता चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण (TCW) एवं शैक्षिक निष्पत्ति मापने के लिए डॉ.ए.के.सिंह एवं ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य कक्षा-कक्ष निष्पत्ति परीक्षण (GCAT) का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है तथा गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से उच्च हैं तथा उक्त दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनशीलता व शैक्षिक निष्पत्ति अति निम्न धनात्मक सह-सम्बन्ध है।

शिक्षा और सृजनशीलता

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। शिक्षा के विभिन्न अनुशासनों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अच्छे अवसरों को प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिताओं से गुजरना पड़ता है। छात्रों की तरह छात्राएँ भी अपने कैरियर के प्रति सजग और तत्पर दिखाई देने लगी हैं। विभिन्न प्रतियागिताओं से उन्हें जूझना पड़ता है। सृजनशीलता एवं शैक्षिक निष्पत्ति के पैमाने पर खरा उतरना उनके लिए भी पहली आवश्यकता हो गई है। सृजनशीलता मनुष्य के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विद्यार्थी के बहुआयामी व्यक्तित्व की द्योतक है। अनेकों विद्यार्थी सृजनशीलता की प्रतिभा के बल पर जीवन में प्रगति पथ पर चलते हैं। विद्यालयी शिक्षा प्राप्ति के दौरान ही विद्यार्थियों को सृजनशीलता के विकास के अवसर प्राप्त होते है। यह मनुष्य की प्रतिभा व अंतरंग भावनाओं का इजहार करती है। जिससे बालक की विद्यालयी विषयों में ... निष्पत्ति उच्च होती है। या निम्न ... सवाल उठता है कि सृजन... सृजनात्मकता एवं शैक्षिक निष्पत्ति क...